E-ISSN: 2664-603X
P-ISSN: 2664-6021
IJPSG 2025; 7(1): 119-121
www.journalofpoliticalscience.com
Received: 02-11-2024
Accepted: 08-12-2024

विष्णु कुमार शर्मा
शोधार्थी, लोक प्रशासन विभाग,
जय नारायण व्यास विश्वविद्यायल,
जोधपुर, राजस्थान, भारत

Corresponding Author:
विष्णु कुमार शर्मा
शोधार्थी, लोक प्रशासन विभाग,
जय नारायण व्यास विश्वविद्यायल,
जोधपुर, राजस्थान, भारत

महिलाओं का प्रशासन पर प्रभाव

विष्णु कुमार शर्मा

DOI: https://doi.org/10.33545/26646021.2025.v7.i1b.436

सारांश
भारतीय समाज में महिलाओं की सामाजिक स्थिति समय के साथ विकसित हुई है। ऐतिहासिक रूप से महिलाओं ने प्रशासन, निर्णय–निर्माण और सामाजिक सुधारों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। स्वतंत्रता संग्राम से लेकर वर्तमान समय तक, महिलाओं ने नेतृत्व, नीति–निर्माण और प्रशासनिक सेवाओं में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई है। हालांकि, महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी और निर्णय लेने की प्रक्रिया में अभी भी चुनौतियाँ बनी हुई हैं। इस अध्ययन में महिलाओं की शासन प्रणाली में भूमिका, उनके नेतृत्व कौशल, नीति निर्माण में योगदान और समाज पर उनके सकारात्मक प्रभावों का विश्लेषण किया गया है। निष्कर्षतः, महिलाओं की सक्रिय भागीदारी प्रशासन और समाज के समग्र विकास के लिए आवश्यक है।

कुटशब्दः महिला नेतृत्व, प्रशासन में महिलाओं की भूमिका, नीति निर्माण, महिला सशक्तिकरण, सामाजिक सुधार, निर्णय–निर्माण

प्रस्तावना
महिलाओ की सामाजिक स्थिति वैदिक काल से ही पतन की ओर अग्रसर हुई और मुगल काल में दयनीय स्थिति हो गई। सती प्रथा व पर्दा प्रथा जैसी कुप्रथाओं के कारण उनकी शिक्षा भी लगभग समाप्त हो चुकी थी किन्तु अब समय बदल चुका है महिलाओ की स्थिति मे भी काफी सुधार आया है। हर क्षेत्र में महिलाओ ने अपनी एक नई पहचान बनायी है। बात अगर महिला राजनीति की कि जाए तो आजादी की लड़ाई से लेकर स्वतंत्रता के इस दौर मे राजनीतिक व प्रशासनिक क्षेत्र में कई महिलाएं आयी और अपनी छाप छोड़ गई किन्तु सफल महिला राजनीतिज्ञो की संख्या कम है। महिलाओ को राजनीतिक प्रशासनिक प्रशिक्षण देना अति आवश्यक है। इसके प्रति उनको जागरूक करना भी आवश्यक है जिससे वे राजनीति और प्रशासनिक क्षेत्र मे अपना अधिक से अधिक योगदान दे सके।

महिलाओ की प्रशासन में बढ़ती भुमिकाः इतिहास से अब तक
बात अगर प्राचीन समय की कि जाए तो ऐसे अनेकों उदाहरण हमारे इतिहास से हमे मिलेंगे जिनमे एक महिला ने बडे–बडे शासनो की बागडोर को सम्भांला है। कभी खुद एक राजा बनकर तो कभी अपने पुत्रो को प्रशासन की समझ को सीखा कर। जैसे मराठाओं में माँ जीजाबाई ने अपने पुत्र शिवाजी के हृदय में वीरता भरी। तब उन्होंने औरंगजेब को युध्द में हराया। अहिल्या बाई होलकर, जिन्होंने न्याय की खातिर अपने ही पुत्र को पागल हाथीयो के समक्ष डाल दिया। यही नही रानी लक्ष्मी बाई जैसी वीरागंना जिन्होंने युद्ध में ही नहीं अपितु अपने राज्य को सुव्यवस्थित रूप से चलाने में अपनी सुझबुझ और वीरता का प्रदर्शन किया। अगर स्वतंत्रता संग्राम के समय की बात की जाए तो सरोजिनी नायडु, सुनीति चौगरी दुर्गा बाई देशमुख, सुचेता कृपलानी, अरुणा आसफ अली जैसी कई स्वतंत्रता सेनानीयों ने क्रान्तिकारियों की मदद की अंग्रेजी हुकुमत को जड़ से उखाड़ फेंकने में। आजादी के समय में भारतीय संविधान सभा का जग निर्माण किया गया उसमे 15 महिला सदस्य भी जिन्होने महिलाओं के हक की आवाज उठाई । भारत की पहली महिला प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गाँधी जी को कौन नहीं जानता, जिन्होंने 15 वर्षों तक भारत के प्रधानमंत्री के रूप में देश की सेवा की। जोकि दुनिया की सबाने लंबे समय तक सेवारत महिला प्रधानमंत्री थी। वर्तमान समय की बात की जाए तो आज भारत के सबसे उच्चतम पदो में से एक राष्ट्रपति का पद जिस पर भी आज एक महिला महामहिम श्रीमति द्रोपदी मुर्मु जी अपनी सेवा देश हित में दे रही है। यही नहीं भारत की अखिल भारतीय सेवाएं (IAS or IPS) मे भी महिलाओ ने अपनी पहचान बनाई है। भारत कही पहली महिला IAS अधिकारी श्रीमती अन्ना राजम मल्होत्रा व पहली महिला IPS अधिकारी डॉ. किरण बेदी थी।

महिलाओ का प्रशासन में योगदान

महिलाओ का प्रशासन में योगदान भारतीय समाज में सदैव महत्वपूर्ण रहा है। समम – समय पर महिलाओ ने विभिन्न क्षेत्रों में अपनी भुमिका निभाई और समाज को प्रेरित किया। प्रशासन में महिलाओ का योगदान न केवल उनके नेतृत्व में शामिल है बल्कि यह समाज मे भलाई व न्याय की दिशा मे भी महत्वपूर्ण कदम है।

महिलाओं का नेतृत्व व निर्णय निर्माण में योगदान

महिलाओ ने प्रशासनिक, राजनीतिक और विभिन्न क्षेत्रों ने अपने नेतृत्व करने में कौशल का परिचय दिया है। उनका नेतृत्व केवल संगठन या देश के लिए राजसी निर्णयों में मदद करना ही नहीं बल्कि सामाजिक व सांस्कृतिक परिवर्तनों को भी बढ़ावा देना है। भारतीय राजनीति में कई महिलाओं ने प्रभावशाली नेतृत्व किया है। जैसे इंदिरा गांधी, सोनिया गाँधी, जय ललिता, ममता बनर्जी, वसुंधरा राजे और भी कई महिला नेता है। निर्णय निर्माण की प्रक्रिया मे अपनी विशिष्ट सोच, दृष्टिकोण व कौशल का अपना योगदान होता है। महिलाओं ने समाज के विभिन्न तबकों के लिए निर्णय लेने में अपनी महत्वपुर्ण भुमिका निभाई है। उनकी निर्णय क्षमता व दुरदर्शिता ने न केवल देश के राजनीतिक परिदृश्य को आकार दिया बल्कि समाज में महिलाओ की भुमिका को भी मजबूत किया है।

राजनीति ही नहीं महिलाओ ने अपने नेतृत्व व निर्णय निर्माण की क्षमता से प्रशासन मे भी सुधार व विकास किया है। महिलाओं ने IAS or IPS जैसे उच्च सरकारी सेवाओं में अपनी नेतृत्व क्षमताओं से अपनी पहचान बनाई है। महिलाओं ने प्रशासन में अपनी विश्वसनीयता, दुरदर्शिता व कठोर कार्यशैली से जुड़े कई क्षेत्रो मे सुधार किया है। उदाहरण के तौर पर इंद्राणी बनर्जी जो पश्चिम बंगाल की मुख्य सचीव बनी उनके नेतृत्व में कई सुधारात्मक कदम उठाए गए।

महिलाओ का नीति निर्माण में योगदान

महिलाओं का प्रशासन में नीति निर्माण में योगदान समय के साथ बढ़ा है। विभिन्न देशों में यह योगदान अलग – अलग कानून के रूप सामने आया है। जैसे कार्य– स्थल पर महिला उत्पीडन को रोकने हेतु बनाये गये कानून, समान कार्य समान वेतन, तीन तलाक प्रतिबंध अधिनियम, बालिका शिक्षा हेतु बने कानुन इत्यादी। और भी कई महत्वपूर्ण नीतियाँ एवम् कानुनो का निर्माण किया जा रहा है।

समानता और अधिकार क्षेत्र में सुधार

महिलाओ को समान वेतन शिक्षा, स्वास्थ्य और कार्यस्थलों पर समानता की दिशा में कई नीतियों का निर्माण किया जा रहा है। उदाहरण के रूप में मातृत्व लाभ अधिनियम 1961, सरकारी पत्रिका में समान अवसर प्रदान किया जाना, घरेलु हिंसा रोकने हेतु बनाये गये कानून, राष्ट्रीय महिला आयोग, कामकाजी महिलाओं हेतु समान वेतन अधिनियम, पारित किया गया। राजनीतिक क्षेत्र में पंचायती राज अधिनियम 1994 पारित कर महिलाओ को 33 प्रतिशत आरक्षण प्रदान किया गया। सरकारी नौकरीयो में भी आज महिलाओ को अलग से आरक्षण प्रदान किया जा रहा है।

प्रशासन पर महिलाओ का सकारात्मक प्रभाव

महिलाओ की प्रशासन में सक्रिय भागीदारी न केवल लाभकारी और न्याय की दिशा मे एक कदम है बल्कि यह प्रशासन और समाज पर सकारात्मक प्रभाव डालती है। जैसे–

- प्रशासन में महिलाएं अव्यवस्थित दृष्टिकोण लाती है। उनकी आवश्यकता और समस्या के समाधान हेतु नए कानुन एवं नीतियों का निर्माण भी किया जाता है।
- प्रशासन में महिलाओं को विश्वसनीयता एवं चरित्र का प्रतीक माना जाता है। उनकी भागीदारी से प्रशासन में नयी सोच का आगमन होता है।
- महिलाओं से संवाद व सहयोग को आधिकारिक तौर पर अंजाम दिया जाता है। उनके विचार प्रशासन में एक सकारात्मक व सहयोगी प्रकृति को बढावा देते है। जिससे समाज व प्रशासन के मध्य बेहतर संबंधों का निर्माण होता है।
- सामाजिक सुधार के कार्यों में महिलाएं अधिक संवेदनशील और सादृश्य होती है। उनका ध्यान केवल आर्थिक विकास पर नहीं बल्कि सामाजिक विकास पर भी होता है।
- महिलाओं को प्रशासन में शामिल होना समाज में प्रेरणा का स्त्रोत है। यह महिलाओं व लडकियों को नेतृत्य हेतु प्रेरित करता है और लिंगभेद को भी कम करता है।
- सतत विकास के लक्ष्यों को हामिल करने में महिलाओ का योगदान महत्वपूर्ण है। वे विशेष रूप से शिक्षा, स्वास्थ्य, जलवायु परिवर्तन व गरीबी जैसे क्षेत्रो में प्रभावशाली कार्य करती है।
- महिलाओ की प्रशासन में अधिक भागीदारी प्रशासन व समाज दोनों के हित में है। क्योकि वे समाज के व्यापक विकास और प्रगति का मार्ग भी प्रशस्त करती है। महिलाओ के प्रशासन में अधिक प्रतिनिधित्व से एक लोकतांत्रिक व न्यायपूर्ण समाज का निर्माण होगा।

चुनौतियाँ

महिलाओ की प्रशासन में भागीदारी बढाने हेतु कई कदम उठाए गए है लेकिन इसके बावजुद वे कई चुनौतियों का सामाना करती है। ये चुनौतियां वैयक्तिक, सामाजिक, सांस्कृतिक व आर्थिक कई तरह की हो सकती है। जैसे –

- पितृसतात्मक सोच जो शहरो मे कम किन्तु गाँवो व छोटे कस्बो में आज भी विद्यमान है।
- महिलाओ को घर समाज द्वारा घरेलु कार्यों तक एवं जिम्मेदारीयो तक सीमित कर देना।
- ग्रामीण इलाको से यदि कुछ महिलाओं ने प्रशासन का हिस्सा बनना चाहा तो शिक्षा व प्रशिक्षण की कमी उनके पैरो की बेडीयाँ बन गई।
- समाज में आज भी महिलाओं व पुरूषों मे शारीरिक व आर्थिक भेदभाव किया जाता है।
- महिलाओं द्वारा यदि अपने हक के लिए आवाज उठाई जाती है तो समाज के कुछ उच्च वर्गीय लोगों द्वारा उनकी आवाज को दबा कर उन्हें असुरक्षित महसुस कराया जाता है।
- महिलाओ को स्थानीय व्यवस्थाओं तक ही सीमित कर दिया जाता है।
- महिला संरक्षण के लिए बनाए गए विधानो व उद्यमो का प्रभावशाली विश्लेषण न हो पाना।
- सामाजिक दबाव व असुरक्षा के कारण कई महिलाएँ विकास की राह में पीछे रह जाती है।
- समाज में महिलाओ का बोलचाल या नेटवर्क पुरुषों की तुलना में कम होना।

सुझाव

- महिलाओ को प्रशासनिक शिक्षण व प्रशिक्षण देने हेतु विशेष कार्यक्रमों का आयोजन समय–समय पर किया जाना चाहिए।
- समाज से पितृसत्तात्मक सोच को खत्म करने हेतु

जागरूकता अभियान चलाए जाए।

- महिलाओं की सुरक्षा हर क्षेत्र में सुनिश्चित करने हेतु कठोर कदम उठाये जाने चाहिए।
- महिलाओ को नवीन क्षेत्र मे शामिल होने पर प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।
- महिलाओ को आर्थिक रूप से स्वतंत्र होने के लिए रोजगार के अवसर प्रदान किये जाने चाहिए।

उपरोक्त समाधानो से महिलाओ की प्रशासन में भागीदारी को सुनिश्चित किया जा सकता है। इससे न केवल समाज में एक नई सोच का प्रसार होगा बल्कि प्रशासन भी अधिक प्रभावशाली और समावेशी बनेगा।

निष्कर्ष

महिलाओ का प्रशासन पर प्रभाव दुरगामी और सकारात्मक हैं। उनकी भागीदारी न केवल समाज मे लैंगिक समानता को बढ़ावा देती है, बल्कि श्रमिक साथियो को इन सांकेतिक, वर्गीकृत व समावेशी सरंचना में स्थान दिलाती है। महिलाएं समाज के हाशिये पर मौजुद सामुहिक जैसे महिलाएं, बच्चे व विमर्श समुह के कार्यों को बेहतर ढंग से समझती है और उनके समाधान हेतु प्रभावशाली व रचनात्मक संरचनाओं का निर्माण करती है। महिलाओं ने अपने नेतृत्व के बल पर स्थानीय व राष्ट्रीय सुरक्षा स्तर, शिक्षा, स्वास्थय, पोषण और न जाने कई क्षेत्रो में सुधार लाने में मदद की है। इसके आलावा महिलाओ की प्रशासन मे सक्रिय भागीदारी ने अन्य महिलाओ को भी प्रोत्साहित व प्रेरित किया है। जिससे एक सकारात्मक बदलाव का चक्र बनता है। हालाँकि पितृसत्तात्मक सोच, आदर्शो की कमी, और पारिवारीक जिम्मेदारियों ने महिलाओं की भुमिका को सीमित किया है। इन को दूर करने हेतु महिलाओ मे शिक्षण प्रशिक्षण, नैतिकता व सामाजिक जागरूकता जैसे कदम उठाने चाहिए।

निष्कर्ष रूप में महिलाओ की बहुसख्यक भागीदारी समाज के समग्र विकास हेतु आवश्यक है। उनके योगदान को स्वीकार करके और उन्हे अधिक अवसर प्रदान कर प्रशासन को और अधिक न्यायपुर्ण, प्रेरक व प्रभावशाली बनाया जा सकता है।

संदर्भ सूची

1. मैश्राम, बी.एन. (2018), भारतीय राजनीति एवं प्रशासन में महिलाओ की भुमिका, शोध पत्र।
2. मिश्र इंदिरा, (2020), प्रशासन और राजनीति में महिलाओ की भुमिका आर्टिकल, देशबन्धु पत्र।
3. शर्मा, प्रियंका (2019), राजस्थान की राजनीति में महिलाओ की प्रारंभिक स्थिति, शोध पत्र।
4. कुमारी, सुमन, (2015), महिलाओ की राजनीतिक सहभागिताः राजस्थान विधान सभा के विशेष सन्दर्भ में, रिव्यू आर्टिकल, Genited Minds Journals
5. गोस्वामी, बी. (2016), इण्डियन वुमेन इन पॉलिटिक्स, दिल्ली, अभिषेक पब्लिकेशन, आर्टिकल ।
6. समाचार पत्र – दैनिक भास्कर, नव जागरण, जनसत्ता